Mahendra's

UP POLICE कांस्टेबल/ UP लेखपाल

HINDI

रस

भाग–3

LIVE 03:00 PM

1.साहित्य में रस का क्या अर्थ होता है?

(A)प्रलय

(B)आनंद

(C)प्रेम

(D)घृणा

रस

कविता, कहानी,उपन्यास, नाटक आदि साहित्य कि विविध विधाओं को पढ़ने, देखने और सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती हैं, उसे रस कहते हैं।

अनेक रसाचार्यों ने अपनी अनुभूतियों के आधार पर रस की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ की हैं।

2.रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन हैं?

(A)भरतमुनि

(B) नंदकिशोर

(C)पतंजति

(D)चरक

नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि ने प्रथमतः रस का उल्लेख अपने नाट्यशास्त्र में किया था।

उनके अनुसार-

"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पति:"

(नाट्यशास्त्र,अध्याय 6)

इसका अर्थ यह हुआ-विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है ।

3 . रस की सर्वप्रथम चर्चा करने वाले आचार्य कोन थे ?

(A)भरतमुनि

(B) नंदकिशोर

(C)पतंजलि

(D)चरक

4. रस के कितने अंग है?

(A) 4

(B) 8

(C) 9

(D) 11

किसी विशेष स्थिति में प्रभावित मन की असाधारण दशा भाव कहलाती है , भाव ही रस का आधार है ।

भाव चार प्रकार के होते हैं-

1. स्थायी भाव

2. विभाव

3. अनुभाव

4. संचारी भाव

5. रस के कितने प्रकार हैं?

(A)8

(B)9

(C)11

(D)12

1.स्थायीभाव-

रस के मनःसंवेग,स्थायी भाव, और रस प्रकार -

मनःसंवेग	स्थायीभाव	रस प्रकार
1. काम	रति	श्रृंगार रस
2. हास	हास	हास्य रस
3. दुःख	शोक	करुण रस
4. क्रोध	क्रोध	रौद्र रस
5. उत्साह	उत्साह	वीर रस
6. भय	भय	भयानक रस
7. घृणा	जुगुप्सा	बीभत्स रस
8. आश्चर्य	विस्मय	अद्भुत रस
9 .दैन्य	निर्वेद	शांत रस
10.वत्सलता	वत्सलता	वात्सलय रस
11. भक्ति	अनुराग	भक्ति रस

1.दीर्घ संधि - जब सजातीय स्वर अ/आ/,इ/ई, उ/ऊ आपस में मिलते हैं तो स्वर दीर्घ हो जाता है। अतः यह दीर्घ स्वर संधि कहलाती है। (अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ)

2.गुण संधि -अ/आ का यह गुण है कि जब अ या आ के पश्चात् इ, ई हो तो 'ए' हो जाता है। अ/आ आ के साथ उ, ऊ हो तो 'ओ' हो जाता है तथा अ आ के पश्चात ऋ हो तो 'अर्' हो जाता है। (अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ)

3.वृद्धि संधि जब अ, आ के साथ ए, ऐ मिलाया जाए तो ऐ तथा अ, आ के साथ ओ औ मिलाया जाए तो औ हो जाता है। (अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ)

4.यण संधि - इ, ई के पश्चात विजातीय स्वर हो तो य् तथा उ ऊ के पश्चात अन्य स्वर हो तो व् तथा ऋ के पश्चात अन्य स्वर हो तो र हो जाता है। (अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ)

5.अयादि संधि - ए के साथ अन्य स्वर मिलने पर अय्, ऐ के साथ अन्य स्वर मिलने पर आय्, ओ के साथ अन्य स्वर मिलने पर अव् तथा औ के साथ अन्य स्वर मिलने पर आव् हो जाता है। (अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ)

वृद्धि संधि

जब अ, आ के साथ ए, ऐ मिलाया जाए तो ऐ तथा अ, आ के साथ ओ औ मिलाया जाए तो औ हो जाता है।

अ + ए/ ऐ = ऐ

आ + ए/ ऐ = ऐ

अ+ओ / औ = औ

आ+ओ / औ = औ

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

मत + ऐक्य = मतैक्य

महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

सदैव = ' सदा +एव ' वृद्धि सन्धि है

लोक + एषणा = लोकैषण

अ/आ + ओ/औ = औ

परम + ओज = परमौज

महा + औदार्य = महौदार्य

परम + औषधि = परमौषधि

6. कौन रस का अंग नहीं है?

(A)विभाव

(B)समभाव

(C)अनुभाव

(D) स्थायीभाव

7. कौन सा रस का भेद नहीं है

(A) श्रृंगार

(B) रौद्र

(C) विभत्स

(D) विषद

8. उद्दीपन का अर्थ क्या होता है

(A)भावों को घटाना

(B)भावों को बढ़ाना

(C)उपर्युक्त दोनों

(D)उपर्युक्त दोनों नहीं

9. या मुरली मुरलीधर की अधरा न धरी अधरा न धरीगी पंक्ति में कौन रस है ?

(A) श्रंगार रस

(B) करुण रस

(C) रौद्र रस

(D) वीर रस

10. श्री कृष्ण के सुन वचन, अर्जुन क्रोध से जलने लगे
सब शोक अपना भुलाकर, करतल युग मलने लगे।
पंक्ति मेंकौन रस है?

(A)वीर रस

(B)शांत रस

(C)भक्ति रस

(D)रौद्र रस

11.आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी।
हाथों पे उसे झुलाती है गोद भरी॥ पँक्ति में कौन रस है?

(A)रौद्र रस

(B)हास्य रस

(C)करुण रस

(D)वात्सल्य रस

12. रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री विभाव कहलाती है।

(A)विभाव

(B)अनुभाव

(C)करुण रस

(D)वात्सल्य रस

विभाव-

रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री विभाव कहलाती है।
विभाव के तीन भेद हैं

(i)आलम्बन –

जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता है, उसे 'आलम्बन विभाव' कहते हैं। जैसे-नायक-नायिका, प्रकृति आदि।

(ii)उद्दीपन –

स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण 'उद्दीपन विभाव' कहलाते हैं।

जैसे—नायिका का रूप सौन्दर्य आदि। प्रत्येक रस के उद्दीपन विभाव अलग-अलग होते हैं।

(iii)आश्रय-

जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है, उसे आश्रय कहते हैं।

13. रस में आश्रय किसे कहते हैं

(A) रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री

(B) जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है

(C) स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण

(D) जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता

विभाव-

रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री विभाव कहलाती है। विभाव के तीन भेद हैं

(i)आलम्बन –

जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता है, उसे 'आलम्बन विभाव' कहते हैं। जैसे-नायक-नायिका, प्रकृति आदि।

(ii)उद्दीपन –

स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण 'उद्दीपन विभाव' कहलाते हैं।

जैसे—नायिका का रूप सौन्दर्य आदि। प्रत्येक रस के उद्दीपन विभाव अलग-अलग होते हैं।

(iii)आश्रय-

जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है, उसे आश्रय कहते हैं।

14. रस में उद्दीपन किसे कहते हैं

(A) रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री

(B) जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है

(C) स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण

(D) जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता

विभाव-

रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री विभाव कहलाती है।
विभाव के तीन भेद हैं

(i)आलम्बन –

जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता है, उसे 'आलम्बन विभाव' कहते हैं। जैसे-नायक-नायिका, प्रकृति आदि।

(ii)उद्दीपन –

स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण 'उद्दीपन विभाव' कहलाते हैं।

जैसे—नायिका का रूप सौन्दर्य आदि। प्रत्येक रस के उद्दीपन विभाव अलग-अलग होते हैं।

(iii)आश्रय-

जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है, उसे आश्रय कहते हैं।

15. रस में आलम्बन किसे कहते हैं

(A) रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री

(B) जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है

(C) स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण

(D) जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता

विभाव-

रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री विभाव कहलाती है।
विभाव के तीन भेद हैं

(i)आलम्बन –

जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता है, उसे 'आलम्बन विभाव' कहते हैं। जैसे-नायक-नायिका, प्रकृति आदि।

(ii)उद्दीपन –

स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण 'उद्दीपन विभाव' कहलाते हैं।

जैसे—नायिका का रूप सौन्दर्य आदि। प्रत्येक रस के उद्दीपन विभाव अलग-अलग होते हैं।

(iii)आश्रय-

जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है, उसे आश्रय कहते हैं।

16. रस में मनोगत भाव को व्यक्त करने वाली शारीरिक और मानसिक चेष्टाएँ को कहते हैं-

(A) रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री

(B) जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है

(C) अनुभाव

(D) वात्सल्य रस

अनुभाव –

मनोगत भाव को व्यक्त करने वाली शारीरिक और मानसिक चेष्टाएँ अनुभाव हैं।

अनुभाव भावों के बाद उत्पन्न होते हैं, इसलिए इन्हें अनु + भाव (भावों का अनुसरण करने वाला) कहते हैं।

अनुभाव मुख्यतः दो प्रकार के हैं

(i)कायिक अनुभाव–

कायिक अनुभाव शरीर की चेष्टाओं को कहते हैं।

जैसे—कटाक्षपात, हाथ से इशारे करना, निश्वास, उच्छ्वास आदि।

कायिक अनुभाव जान-बूझकर, प्रयासपूर्वक किए जाते हैं।

(ii) सात्त्विक अनुभाव-

जो शारीरिक चेष्टाएँ स्वाभाविक रूप से स्वत: उत्पन्न हो जाती हैं,
उन्हें सात्त्विक भाव कहते हैं। ये गणना में 8 हैं

1. रोमांच 2. स्वरभंग 3. कंप 4. स्वेद
5. वैवर्ण्य (चेहरे का रंग उड़ जाना) 6. अश्रु
7. प्रलय (चेतनाशून्य होना) 8. स्तम्भ (शरीर की चेष्टा का रुक जाना)

- देवेन्द्र का संधि विच्छेद = देव + इन्द्र
- साँप के लिये सही पर्यायवाची शब्द - सर्प, अहि, भुजंग, नाग

- रात - दिन में कौन सा समास है- द्वन्द समास
- एक ही समय में रहने वाले' के लिये एक शब्द- समसामयिक

- मातृत्व शब्द है - भाव बाचक शब्द
- चार गज मलमल में कौन सा विशेषण है - परिमाण बोधक विशेषण

- सत्य और अहिंसा का संबंध है- घनिष्ठ
- ईश्वर तुम्हें सफलता प्रदान करें। कैसा वाक्य है- इच्छावाचक वाक्य

- कच्चे घड़े पानी भरना का अर्थ है - मूर्खता पूर्ण कार्य करना
- उर्वर का विलोम शब्द है - ऊसर

- बीजक के रचनाकार है- कबीर दास
- विनयपत्रिका किसकी प्रसिद्ध कृति है- तुलसी दास
- भारत- भारती किसकी रचना हैं - मैथिलीशरण गुप्त
- चंद्रकान्ता के लेखककार है - देवकीनन्दन खत्री
- गीतांजलि के रचनाकार है- रवीन्द्रनाथ टैगोर

- भारत दुर्दशा किसकी कृति है- भारतेन्दु हरीशचन्द्र
- मैला आँचल के लेखक कौन है - फणीशवर नाथ रेण' .
- चांद का मुँह टेढ़ा है' किसकी रचना है- मुक्तिबोध
- 'मधुशाला' के कवि कौन है - हरिवंश राय बच्चन -
- तमस किसकी रचना है - भीष्म साहनी

खरा	खोटा	खुला	बंद
खगोल	भूगोल	कठिनाई	सरलता
घरेलू	बाहरी	केंद्रित	विकेन्द्रित
बेचना	खरीदना	दूर के	करीबी
गौण	प्रमुख प्रधान	कभी–कभी	अक्सर
गाड़ना	उखाड़ना	प्रकट	गूढ़
गाढ़ा	पतला	सही	गडबड
ग्रहण	त्याग	गजब	सामान्य
चालाक	बेवकूफ	निर्दयी	दयालु
ग्रास	मोक्ष	गोरक्षक	गोभक्षक
रुखड़ा	चिकना	अँधेरा	चाँदनी
चमकहीन	चमकदार	अदेय	देय
घटाव	जोड़	अगठित	गठित

- राम चरित मानस में कितने काण्ड है - 7
- हिन्दी का आदि कवि किसे माना जाता है – स्वयंभू
- भूषण किस रस के कवि थे- वीर रस
- रामचरित मानस की भाषा है- अवधी भाषा
- साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप पंक्ति के रचेता है- कबीर दास जी
- अशोक के फूल निबंध के रचनाकार- हजारी प्रसाद द्विवेदी
- संस्कृति के चार अध्याय किस की रचना है- रामधारी सिंह दिनकर
- 'पद्मावत' किसकी रचना है - मलिक मोहम्मद जायसी
- अविकारी शब्द होते हैं - अव्यय
- "निराशा" शब्द का संधि विच्छेद है- नि:+आशा
- सदैव में प्रयुक्त संधि का नाम है- स्वर संधि
- हिन्दी खड़ी बोली किस अपभ्रंश से विकसित हुई है - शौरसेनी
- दिनानुदिन मे कौन सा समास है- अव्ययीभाव समास
- वकील किस भाषा का शब्द है – अरबी
- गोदान के लेखक है- प्रेमचंद

भेद- रस के मुख्ययतः 11 प्रकार होते हैं :

1. श्रृंगार रस
2. हास्य-रस
3. करुण रस
4. रौद्र-रस
5. वीर रस
6. भयानक रस
7. बीभत्स रस
8. अद्भुत रस
9. शान्त रस
10. भक्ति रस
11. वात्सल्य रस

1.स्थायीभाव-

रस के मनःसंवेग,स्थायी भाव, और रस प्रकार -

मनःसंवेग	स्थायीभाव	रस प्रकार
1. काम	रति	श्रृंगार रस
2. हास	हास	हास्य रस
3. दुःख	शोक	करुण रस
4. क्रोध	क्रोध	रौद्र रस
5. उत्साह	उत्साह	वीर रस
6. भय	भय	भयानक रस
7. घृणा	जुगुप्सा	बीभत्स रस
8. आश्चर्य	विस्मय	अद्भुत रस
9 .दैन्य	निर्वेद	शांत रस
10.वत्सलता	वत्सलता	वात्सलय रस
11. भक्ति	अनुराग	भक्ति रस

2.विभाव-

रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री विभाव कहलाती है।
विभाव के तीन भेद हैं

(i)आलम्बन –

जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता है, उसे 'आलम्बन विभाव' कहते हैं। जैसे-नायक-नायिका, प्रकृति आदि।

(ii)उद्दीपन –

स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण 'उद्दीपन विभाव' कहलाते हैं।

जैसे—नायिका का रूप सौन्दर्य आदि। प्रत्येक रस के उद्दीपन विभाव अलग-अलग होते हैं।

(iii)आश्रय-

जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है, उसे आश्रय कहते हैं।

3.अनुभाव –

मनोगत भाव को व्यक्त करने वाली शारीरिक और मानसिक चेष्टाएँ अनुभाव हैं।

अनुभाव भावों के बाद उत्पन्न होते हैं, इसलिए इन्हें अनु + भाव (भावों का अनुसरण करने वाला) कहते हैं।

अनुभाव मुख्यतः दो प्रकार के हैं

(i)कायिक अनुभाव–

कायिक अनुभाव शरीर की चेष्टाओं को कहते हैं।
जैसे—कटाक्षपात, हाथ से इशारे करना, निश्वास, उच्छ्वास आदि।
कायिक अनुभाव जान-बूझकर, प्रयासपूर्वक किए जाते हैं।

(ii) सात्त्विक अनुभाव-

जो शारीरिक चेष्टाएँ स्वाभाविक रूप से स्वत: उत्पन्न हो जाती हैं,
उन्हें सात्त्विक भाव कहते हैं। ये गणना में 8 हैं

1. रोमांच 2. स्वरभंग 3. कंप 4. स्वेद
5. वैवर्ण्य (चेहरे का रंग उड़ जाना) 6. अश्रु
7. प्रलय (चेतनाशून्य होना) 8. स्तम्भ (शरीर की चेष्टा का रुक जाना)

4.संचारी भाव-

जो भाव मन में केवल अल्प काल तक संचरण करके चले जाते हैं, वे संचारी भाव कहलाते हैं। इन्हीं का दूसरा नाम व्याभिचारी भाव है।
ये स्थायी भाव को पुष्ट करके क्षण भर में गायब हो जाते हैं।
इनकी संख्या 33 है—

(1) निर्वेद, (2) आवेग,(3) दैन्य, (4) श्रम, (5)मद,
(6)जड़ता,(7) उग्रता,(8) मोह,(9)शंका,(10)चिन्ता,
(11)ग्लानि,(12)विषाद,(13)व्याधि,(14)आलस्य,

(15)अमर्ष,(16)हर्ष,(17)गर्व,(18)असूया,(19)धृति,
(20)मति,(21)चापल्य,(22)व्रीड़ा(लज्जा),
(23)अवहित्था(हर्ष, भय आदि भावों को छिपाना),

(24)निद्रा,(25)स्वप्न,(26)विवोध,(27)उन्माद,
(28)अपस्मार(मिरगी),(29)स्मृति,(30)औत्सुक्य,
(31)त्रास,(32)वितर्कऔर(33)मरण।

(1) श्रृंगार रस -

श्रृंगार रस में नायक और नायिका के मन में संस्कार रूप में स्थित रति या प्रेम जब रस के अवस्था में पहुंच जाता है तो वह श्रृंगार रस कहलाता है।

इसके अंतर्गत वसंत ऋतु, सौंदर्य, प्रकृति, सुंदर वन, पक्षियों श्रृंगार रस के अंतर्गत नायिकालंकार ऋतु तथा प्रकृति का वर्णन भी किया जाता है।
श्रृंगार रस को रसराज या रसपति भी कहा जाता है।

(1)श्रृंगार रस के भेद -

श्रृंगार रस के दो भेद होते हैं संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार

(1) संयोग श्रृंगार -

जब नायक नायिका के परस्पर मिलन, स्पर्श, आलिंगन, वार्तालाप आदि का वर्णन होता है तब वहां पर संयोग श्रृंगार रस होता है।

पलकन्हि हु परिहरि निमेखे।।

अधिक सनेह देह भई भोरी।
सरद ससिहि जनु चितव चकोरी।।

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मंदिर माही।
गावति गीत सबै मिलि सुन्दरि बेद जुवा जुरि विप्र पढ़ाही ।।
राम को रूप निहारित जानकि कंकन के नग की
परछाही।
यातें सबै भूलि गई कर टेकि रही, पल टारत नाहीं।

तुलसीदास
स्पष्टीकरण:-
इस पद मे स्थाई भाव रति है,
राम-आलंबन, सीता-आश्रय,
नग में पड़ने वाला राम का प्रतिविम्व उद्दीपन,
उस प्रतिबिम्ब को देखना, हाथ टेकना अनुभाव, तथा हर्ष
एवं जड़ता संचारी भाव है।
अत: इस पद में संयोग श्रृंगार है।

(2)वियोग श्रृंगार रस-

जहां पर नायक-नायिका का परस्पर प्रबल प्रेम हो लेकिन मिलन न हो अर्थात नायक-नायिका के वियोग का वर्णन हो वहां पर वियोग रस होता है।
वियोग श्रृंगार रस का स्थायी भाव रति होता है

उदाहरण-

उधो, मन न भए दस बीस।
एक हुतो सो गयौ स्याम संग,को अवराधै ईस॥
इन्द्री सिथिल भईं सबहीं माधौ बिनु जथा देह बिनु सीस।
स्वासा अटकिरही आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस॥
तुम तौ सखा स्यामसुन्दर के, सकल जोग के ईस।

2.हास्य रस

काव्य में किसी की विचित्र वेशभूषा, चेष्टा, कथन आदि हँसी उत्पन्न करने वाले कार्यों का वर्णन 'हास्य रस' कहलाता है।

नाना वाहन नाना वेषा ।
बिहसे शिव समाज निज देखा ।।
कोउ मुखहीन बिपुल मुख काहू ।
बिन पद-कर कोऊं बहु-बाहु ।।

3.करुण रस-

करुण शब्द का प्रयोग सहानुभूति एवं दया मिश्रित दुःख के भाव को प्रकट करने के लिये किया जाता है, अतः जब स्थायी भाव शोक विभाव अनुभव एवं संचारी भाव के सहयोग से अभिव्यक्त होकर आस्वाद रूप धारण करता है तब इसकी परिणीति करुण रस कहलाती है। करुण रस का स्थायी भाव शोक है।

सोक बिकल सब रोवहिं रानि। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी॥
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमितल बारहिं बारा॥

4.रौद्र रस

अपने अथवा अपने प्रिय की निन्दा, हानि अथवा विरोध से रौद्र रस की उत्पत्ति होती है।

श्री कृष्ण के सुन वचन, अर्जुन क्रोध से जलने लगे
सब शोक अपना भुलाकर, करतल युग मलने लगे।
- मैथिलीशरण गुप्त

5.वीर रस

इसका स्थायी भाव उत्साह होता है।

जब किसी रचना या वाक्य आदि से वीरता जैसे स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, तो उसे वीर रस कहा जाता है।
इस रस के अंतर्गत जब युद्ध अथवा कठिन कार्य को करने के लिए मन में जो उत्साह की भावना विकसित होती है उसे ही वीर रस कहते हैं।

बुंदेले हर बोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।

फहरी ध्वजा, फड़की भुजा, बलिदान की ज्वाला उठी।
निज जन्मभू के मान में, चढ़ मुण्ड की माला उठी।

6.अद्भुत रस-

इसका स्थायी भाव आश्चर्य होता है। जब व्यक्ति के मन में विचित्र अथवा आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर जो विस्मय आदि के भाव उत्पन्न होते हैं उसे ही अद्भुत रस कहा जाता है।

देख यशोदा शिशु के मुख में
सकल विश्व की माया
क्षणभर को वह बनी अचेतन,
हिल न सकी कोमल काया॥

इहाँ उहाँ हुई बालक देखा ।
मति भ्रम मोर कि अवनि विशेषा।

7.वीभत्स रस-

इसका स्थायी भाव जुगुप्सा होता है। घृणित वस्तुओं घृणित चीजों या घृणित व्यक्ति को देखकर या उनके संबंध में विचार करके या उनके सम्बन्ध में सुनकर मन में उत्पन्न होने वाली घृणा या ग्लानि ही वीभत्स रस कहलाती है।

आँखे निकाल उड़ जाते. क्षण भर उड़ कर आ जाते शव जीभ खींचकर कौवे,
चुभला चभला कर खाते भोजन में श्वान लगे
मुरदे थे भू पर लेटे खा माँस चाट लेते थे, चटनी सैम बहते बहते बेटे

8.भयानक रस-

इसका स्थायी भाव भय होता है, जब किसी भयानक या बुरे व्यक्ति या वस्तु को देखने या उससे सम्बंधित वर्णन करने या किसी दुःखद घटना का स्मरण करने से मन में जो व्याकुलता अर्थात परेशानी उत्पन्न होती है उसे भय कहते हैं उस भय के उत्पन्न होने से जिस रस कि उत्पत्ति होती है उसे भयानक रस कहते हैं।

अखिल यौवन के रंग उभार,
हड्डियों के हिलाते कंकाल॥
कचों के चिकने काले, व्याल,
केंचुली,काँस,सिबार ॥

9.शांत रस -

इसका स्थायी भाव निर्वेद (उदासीनता) होता है। मोक्ष और आध्यात्म की भावना से जिस रस की उत्पत्ति होती है, उसको शान्त रस नाम देना सम्भाव्य है।
इस रस में तत्व ज्ञान कि प्राप्ति अथवा संसार से वैराग्य होने पर परमात्मा केवास्तविक रूप का ज्ञान होने पर मन को जो शान्ति मिलती है।

जब मै था तब हरि नाहिँ अब हरि है मै नाहि सब
अँधियारा मिट गया जब दीपक देख्या माहि

10.वात्सल्य रस-

इसका स्थायी भाव वात्सल्यता (अनुराग) होता है। माता का पुत्र के प्रति प्रेम, बड़ों का बच्चों के प्रति प्रेम, गुरुओं का शिष्य के प्रति प्रेम, बड़े भाई का छोटे भाई के प्रति प्रेम आदि का भाव स्नेह कहलाता है यही सेह का भाव परिपुष्ट होकर वात्सल्य रस कहलाता है।

बाल दसा सुख निरखि जसोदा,
पुनि पुनि नन्द बुलवात।
अंचरा तर लै ढाकी सूर,
प्रभु को दूध पियावति॥

11.भक्ति रस

स्थायी भाव देव रति है। इस रस में ईश्वर कि अनुरक्ति और अनुइसकाराग का वर्णन होता है अर्थात इस रस में ईश्वर के प्रति प्रेम का वर्णन किया जाता है।

गुरु मेरी पूजा, गुरु गोविन्द
गुरु मेरा पारब्रह्म, गुरु गोविन्द। ।

प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी
जाकी गंध अंग-अंग समाही। ।

1. सिर घोट मोट पर चुटिया थी लहराती।
थी तोंद लटककर घुटनों को छू जाती।
जब मटक-मटक कर चले, हँसी थी भारी।
हो गए देखकर, लोट-पोट नर-नारी।।

(a)अद्‌भुत

(b) करुण

(c) हास्य

(d) इनमें से कोई नहीं

2. वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,
सामने पहाड़ हो कि सिंह की दहाड़ हो,
तुम कभी रुको नहीं, तुम कभी झुको नहीं।

(a) करुण रस

(b) भयानक रस

(c) शान्त रस

(d) वीर रस

3.घंटा भर आलाप राग में मारा गोता
धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता।।

(a) संयोग

(b) वीर

(c) हास्य

(d) करुण

4.बुंदेले हर बोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।

(a) संयोग

(b) वीर

(c) हास्य

(d) करुण

5. जब दहक उठा सीमांत, पुकारा माँ ने शीश चढ़ाने को।
नौजवाँ लहू तब तड़प उठा, हँसते-हँसते बलि जाने को।
गरजे थे लाखों कण्ठ, आज दुश्मन को मजा चखाएँगे।
भारत धरणी के पानी का, जौहर जग को दिखलाएँगे।

(a) रौद्र

(b) भयानक

(c) वीर

(d) हास्य

6 . ऐसे बेहाल बेवाइन सों, तुम आए इतै न कितै दिन खोए।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुणा करिकै करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैंननि के जल सों पग धोए।

(a) भयानक

(b) शान्त

(c) वियोग

(d) करुण

7 “कौन हो तुम वसंत के दूत,विरस पतझड़ में अति सुकुमार,
घन तिमिर में चपला की रेख, तपन में शीतल मंद बयार ।”

(a) शान्त

(b) करुण

(c) वियोग श्रृंगार

(d) संयोग श्रृंगार

8. भरत मुनि के अनुसार रसों कि संख्या कितनी हैं –

(a) 9

(b) 11

(c) 8

(d) 10

9. कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि साहित्य कि विविध विधाओं को पढ़ने, देखने और सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती हैं, उसे रस कहते हैं ?

(a)अलंकार

(b)समास

(c)संधि

(d)रस

10. संचारी भावों की संख्या कितनी हैं

(a)33

(b)36

(c)32

(d)31

- राम चरित मानस में कितने काण्ड है - 7
- हिन्दी का आदि कवि किसे माना जाता है – स्वयंभू
- भूषण किस रस के कवि थे- वीर रस
- रामचरित मानस की भाषा है- अवधी भाषा
- साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप पंक्ति के रचेता है- कबीर दास जी
- अशोक के फूल निबंध के रचनाकार- हजारी प्रसाद द्विवेदी
- संस्कृति के चार अध्याय किस की रचना है- रामधारी सिंह दिनकर
- 'पद्मावत' किसकी रचना है - मलिक मोहम्मद जायसी
- अविकारी शब्द होते हैं - अव्यय
- "निराशा" शब्द का संधि विच्छेद है- निः+आशा
- सदैव में प्रयुक्त संधि का नाम है- स्वर संधि
- हिन्दी खड़ी बोली किस अपभ्रंश से विकसित हुई है - शौरसेनी
- दिनानुदिन मे कौन सा समास है- अव्ययीभाव समास
- वकील किस भाषा का शब्द है – अरबी
- गोदान के लेखक है- प्रेमचंद

उपकार – भलाई,नेकी,हितसाधन, कल्याण, मदद, परोपकार।
उत्सव – समारोह, पर्व, त्यौहार, जलसा, जश्न।
उदय – प्रकट होना, आरोहण, चढ़ना।
उदास – दुखी, रंजीदा, विरक्त, अनमना, अन्यमनस्क।
उद्देश्य – लक्ष्य, ध्येय, हेतु, प्रयोजन।
उद्यम – साहस,उद्योग,परिश्रम,व्यवसाय,धंधा,कार्य,व्यापार, कर्म, क्रिया।
उपमा – तुलना, मिलान, सादृश्य, समानता।
उदर – पेट, कुक्ष, जठर।
ऊँट – उष्ट्र, क्रमलेक, मरुयान, लम्बोष्ठ, महाग्रीव।
ऐश्वर्य – वैभव, सम्पन्नता, समृद्धि, प्रभुत्व, ठाठ–बाट।
ओझल – गायब, लुप्त, अदृश्य, अंतर्धान, तिरोभूत।
ओस – तुषार, हिमकण, शबनम, हिमबिँदु।

धन्यवाद